पाठ - 37A

संचार माध्यमों के प्रमुख अवयव

मुख्य विषय

आपने अख़बार पढ़ते, रेडियो सुनते अथवा दूरदर्शन पर कार्यक्रम देखते समय महसूस किया होगा कि इनमें एक ही तरह की सामग्री नहीं होती। अखबारों में समाचार प्रमुख होते हैं लेकिन उनके साथ-साथ विज्ञापन, संपादकीय, लेख, चित्र, कार्टून आदि विविध प्रकार की सामग्रियों से उसे सजाया जाता है। इसी प्रकार रेडियो पर भी समाचारों के अलावा भेंटवार्ताएँ, वार्ताएँ, धारावाहिक रचनाएँ, गीत-संगीत, नाटक आदि का भी प्रसारण होता है। बीच-बीच में (ब्रेक के बाद) विज्ञापन भी प्रसारित होते हैं। यही प्रक्रिया दूरदर्शन पर भी होती है। वहाँ भी अलग-अलग प्रकार की सामग्री दिखाई जाती है। इस पाठ में संचार माध्यमों में प्रयोग होने वाले प्रमुख अवयवों के बारे में विस्तार से बताया गया है।

मुख्य बिंदु

संचार माध्यम के प्रमुख अवयव

1. विज्ञापन : विज्ञापन उपभोक्ताओं के बीच वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने का एक साधन है, किंतु साथ ही यह संचार माध्यमों की आय का भी मुख्य स्रोत होता है। विज्ञापनों की दरें किसी अखबार की प्रसार संख्या यानी उसे पढ़ने वाले लोगों की संख्या के हिसाब से तय होती हैं। विज्ञापन देने वाले व्यापारिक संगठन अखबारों के पाठक वर्ग के आर्थिक, सामाजिक स्तर को ध्यान में रखकर विज्ञापन छपवाते हैं। कुछ विज्ञापन लोकहित में प्रकाशित या प्रसारित किए जाते हैं। पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो और दूरदर्शन में प्रकाशन/प्रसारण के अलावा विज्ञापन के और भी अनेक माध्यम हैं। सिनेमा स्लाइड, इश्तेहार, होर्डिंग, रेलगाड़ियों, बसों, ट्रकों, दीवारों पर लिखवाना, खेल प्रतियोगिताओं, प्रदर्शनियों, मेलों आदि के मौकों पर किसी वस्तु या संदेश का प्रचार-प्रसार इसी श्रेणी में आता है।
2. फोटो : यदि किसी समाचार के साथ उससे संबंधित फोटो दे दिए जाएँ तो उसका प्रभाव बढ़ जाता है। जिन पत्रिकाओं में फोटो कम छपते हैं, उनके प्रति पाठक का आकर्षण कम होता है। खेल, फिल्म, कला, विज्ञान आदि विषयों की पत्रिकाएँ तो बिना चित्रों के छप ही नहीं सकतीं। दूरदर्शन तो है ही दृश्य माध्यम, और फोटो उसका आधार है। अब तो फोटो पत्रकारिता एक स्वतंत्रा विधा के रूप में उभर चुकी है।

3. कार्टून अथवा व्यंग्य चित्र : कार्टून अथवा व्यंग्य चित्र भी अब पत्र-पत्रिकाओं का अनिवार्य हिस्सा बन चुके हैं और ये परोक्ष रूप से अपना संदेश प्रेषित करते हैं। कार्टून का उद्देश्य किसी पर कीचड़ उछालना या मज़ाक उड़ाना नहीं बल्कि किसी घटना या विचार को तीखेपन तथा कचोट के साथ प्रस्तुत करना है।
4. भेंटवार्ता : इसमें किसी घटना, विषय या समस्या से जुड़े एक या अधिक लोगों से कोई संवाददाता या पत्रकार एकांत में सवाल-जवाब करके कुछ जानकारी प्राप्त करता है। भेंटवार्ताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती हैं और साथ ही रेडियो तथा दूरदर्शन से प्रसारित भी होती हैं। कभी-कभी भेंटवाताओं से बहुत बड़े समाचार भी निकल आते हैं। भेंटवार्ताएँ किसी खास समाचार अथवा घटना के बारे में भी हो सकती हैं और किसी राजनेता, अधिकारी या विषय के जानकार से सामान्य तौर पर बातचीत भी हो सकती हैं।
5. वार्ता : यह आकाशवाणी की विधा है, जिसमें किसी विषय पर विस्तार से चर्चा की जाती है। इसमें कोई जानकार व्यक्ति निर्धारित समय में दिए गए विषय के विभिन्न पहलुओं पर सरल और सुबोध भाषा में प्रकाश डालता है। विषय की स्पष्टता, विचारों की निष्पक्षता और भाषा की सरलता के साथ-साथ सफल वार्ता की एक महत्त्वपूर्ण पहचान है उसका सही प्रस्तुतीकरण।
6. परिचर्चा : परिचर्चा एक तरह से वार्ता का ही विस्तार है। इसमें तीन या उससे अधिक लोग एक साथ बैठकर आपसी बातचीत के माध्यम से किसी विषय या समस्या को श्रोताओं/दर्शकों के सामने रखते हैं। परिचर्चा में किसी एक व्यक्ति को संयोजक (माडरेटर) तय किया जाता है, जो एक तरह से सूत्राधार होता है और परिचर्चा का संचालन करता है। उसे ध्यान रखना होता है कि विषय के सभी मुख्य पहलुओं पर विचार हो जाए और उसमें भाग लेने वाले सब लोगों को अपनी राय व्यक्त करने का मौका मिले। परिचर्चा का उद्देश्य विषय के विभिन्न पहलुओं की जानकारी श्रोताओं/दर्शकों को देना है।
7. आलेख : जब कोई भी वार्ता अखबार/पत्रिका में प्रकाशित होती है तो उसे आलेख कहा जाता है। वार्ताओं की तरह आलेख भी विभिन्न विषयों पर लिखे जाते हैं।
8. संपादकीय : संपादकीय में किसी महत्त्वपूर्ण घटना, सरकार के फैसले, सामाजिक समस्या आदि पर टिप्पणी होती है। यह मुख्यतः अखबारों और पत्रिकाओं में संपादक की ओर से संपादकीय पृष्ठ पर लिखा जाता है।
9. फीचर : इसमें किसी समाचार के व्यापक प्रभाव का दर्शन और मूल्यांकन होता है। साथ ही एक शब्दचित्र खींचा जाता है। यह विशेष सत्य पर आधारित होता है जो पाठक अथवा दर्शक की जिज्ञासा, सहानुभूति, आशंका, विनोद, संत्रास आदि संवेदनाओं

को उत्पन्न करने में सहायक होता है। किसी अच्छे फीचर को पढ़ अथवा देखकर संतोष प्राप्त होता है और भावनाओं की तुष्टि होती है। यह मूलतः मनोरंजन के साथ सूचना देने के उद्देश्य से लिखा जाता है।

10. धारावाहिक : धारावाहिक का अर्थ होता है किसी भी लंबी सामग्री को निर्धारित समय पर क्रमशः प्रकाशित अथवा प्रसारित करना। अखबारों में साहित्य, कला तथा संस्कृति, बच्चों के प्राकृतिक स्वास्थ्य से संबंधित किसी घटना अथवा समस्या पर आधारित खबरें तथा सामग्री भी धारावाहिक रूप में प्रकाशित की जाती है। दूरदर्शन पर धारावाहिक रूप में कहानियाँ, नाटक, फिल्में तथा प्रतियोगितापरक कार्यक्रम अधिक दिखाए जाते हैं। अलग-अलग विषयों जैसे संगीत, नृत्य तथा किसी घटना से संबंधित धारावाहिक भी प्रसारित होते हैं।
11. आँखों देखा हाल : आँखों देखा हाल प्रसारण माध्यमों की सबसे अधिक विश्वसनीय विधा है। इसमें दर्शक/श्रोता तथा वास्तविक घटना के बीच कम दूरी रहती है। टेलीविज़न में तो यह दूरी नाम मात्रा की रह जाती है, क्योंकि उसमें कैमरे की आँखों से सब कुछ दर्शक के सामने ही आ जाता है और कमेंटेटर या आँखों देखा हाल बताने वाला व्यक्ति सिर्फ सहायक जानकारी देता है।

अपना मूल्यांकन कीजिए

1. 'आज विज्ञापन ने उपभोक्ताओं की जीवन-शैली को बेहद प्रभावित किया है।' इस कथन से आप कितना सहमत हैं? सिद्ध कीजिए।
2. संचार माध्यमों के अंतर्गत फोटो की भूमिका को उदाहरण सहित विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
3. कार्टून अथवा व्यंग्य चित्र की उपयोगिता के बारे में आपके क्या विचार हैं? स्पष्ट कीजिए।
4. मुद्रित माध्यमों में संपादकीय के योगदान को प्रस्तुत कीजिए।